अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 1, मार्च 2026, पृष्ठ 311–317
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट), 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n1.2026.030

विकसित भारत 2047 के संदर्भ में छात्रों के समग्र विकास पर धार्मिक नैतिकता के प्रभाव पर एक अध्ययन

दीपिका तिवारी[1] और पीयूष दत्त मिश्रा[2]

प्राप्तिः 28 मार्च 2026 / संशाधित 29 मार्च 2026 / स्वीकृतः 29 मार्च 2026
प्रकाशितः 31 मार्च 2026, जर्नल वेबसाइटः https://anubodhan.org

सारांश

भारत एक बहुसंस्कृति व बहुधार्मिक देश है। विकसित भारत @ 2047 भारत सरकार का समग्र विजन है। इसका उद्देश्य समावेशी विकास नवाचार, सुशासन और स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करना है। यह सामाजिक आर्थिक और तकनीकी क्षेत्र में सुधार करता है ताकि सभी नागरिकों के लिए समृद्धि निश्चित हो सके। जिसकी आध्यात्मिक परंपराएं शिक्षा, सामाजिक व्यवहार और नैतिक संरचनाओं को सदियों से प्रभावित करती रही है। अर्थात वर्ष 2047 में जब प्रत्येक भारतवासी आजादी के 100 वर्ष में प्रवेश करेगा तब भारत एक विकसित राष्ट्र होगा इस दृष्टि से विकसित भारत @ 2047 की दृष्टि से ऐसी परिकल्पना की गई है। जो भौतिक चेतन ज्ञान, कौशल मूल्य से संपन्न हो और शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं बल्कि विद्यार्थियों के समग्र विकास जैसे नैतिक, बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देना है और सुनिश्चित करना है कि धार्मिक नैतिकता छात्रों के समग्र विकास सामाजिक, नैतिक आध्यात्मिक, बौद्धिक, भावनात्मक स्तर पर प्रभाव डालती है।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि धार्मिक नैतिकता छात्रों में सत्य, अहिंसा, करुणा, अनुशासन, सहिष्णुता, आत्मनियंत्रण जिम्मेदारी और राष्ट्रहित जैसे मूल्यों को विकसित कर सकती है। जो सार्वभौमिक नैतिकताओं पर आधारित है। जो सभी धर्म में समान रूप से विद्यमान है। कोई भी देश हो उसके भविष्य की नींव वहां के छात्र होते हैं इसलिए उनके समग्र विकास बहुत ही आवश्यक है। क्योंकि नींव जितनी मजबूत होती है मकान

[1]शोधार्थी, उ. प्र. राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
E-mail: dipikatiwari2001@gmail.com
[2]शोधार्थी, उ. प्र. राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
E-mail: piyushdatt1798@gmail.com

उतना ही अच्छा व टिकाऊ होता है। इसलिए छात्र का विकास होगा तभी देश विकसित होगा। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि विकसित भारत 2047 तक धार्मिक नैतिकता को जीवन आधारित और मूल्य आधारित दृष्टिकोण से विद्यालय शिक्षा में समाहित किया जाए तो यह 2047 तक विकसित भारत के निर्माण में, युवा में धार्मिक नैतिकता, छात्रों में करुणा, सत्य, कर्तव्यनिष्ठा संयम, कर्तव्यपरायणता तथा राष्ट्रहित जैसी मूल प्रवृत्तियों का विकास कर सकती है और भावी युवा पीढ़ी को मजबूत आधार प्रदान कर सकती है। जिससे भारत का विकास होगा।

मुख्य बिंदु: विकसित भारत @ 2047, धार्मिक, नैतिकता, नई शिक्षा नीति 2020।

प्रस्तावना

हमारा भारत विभिन्न धार्मिक, संस्कृति और आध्यात्मिक परंपराओं वाला देश है। किसी भी देश की प्रगति उसकी शिक्षा प्रणाली से होती है और शिक्षा से लोगों की उत्पादकता रचनात्मकता तथा नवाचार प्रवृत्ति बढ़ती है। भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों की जान धार्मिक आस्थाओं में गहराई से समाहित हैं। चाहे वह हिंदू धर्म का धर्म सिद्धांत हो, बौद्ध धर्म का अष्टांगिक मार्ग हो, जैन धर्म का अहिंसा और अपरिग्रह, इस्लाम धर्म का भाईचारा और ईसाई धर्म का प्रेम और सेवा या सिख धर्म का सेवा और समानता हो, सभी धर्म हमारे भारत में सम्मिलित हैं।

ऑनलाइन शिक्षा नीति 2020 में भी समग्र शिक्षा को शिक्षा प्रणाली का केंद्रीय स्तंभ माना गया है। यानी NEP 2020 में शिक्षा केवल बौद्धिक नहीं बल्कि नैतिक, भावनात्मक, समाजिक, शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से भी छात्रों का विकास करती है और नई शिक्षा छात्रों में ऐसे मूल्य का विकास करती है जो सभी धर्म में समान रूप से पाए जाते हैं जैसे सत्य, अहिंसा, श्रम, करुणा, सेवा, अनुशासन और समानता। यह मूल्य न केवल व्यक्तिगत चरित्र को उन्नत करते हैं बल्कि सामाजिक सामंजस्य, राष्ट्रीय एकता और जिम्मेदार नागरिकता को भी मजबूत बनाते हैं। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था जिन चुनौतियों जैसे तकनीकी–प्रतिस्पर्धात्मक तनाव, अनैतिक आचरण, हिंसक प्रवृत्तियां तथा मूल्य हीनता का सामना कर रही है, उनसे निपटने में धार्मिक नैतिकता एक प्रभावी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

साहित्य समीक्षा

गीता सिंह के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत के सनातन ज्ञान एवं विचारों से समृद्धि परंपरा के आलोक में निर्मित की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधार स्तंभों में भारतीय ज्ञान परंपरा को भी एक केंद्रीय स्तंभ माना गया है।

राजेंद्र कुमार पिवहरे (2025) के अनुसार आज हमारा भारत जब विकसित भारत 2047 के उद्देश्य की ओर अग्रसर है। तब साहित्य की भूमिका और अधिक प्रासंगिक हो रही है। अतः हम साहित्य के माध्यम से ऐसे भारत का गठन कर सकते हैं, जो केवल आर्थिक और तकनीकी रूप से ही नहीं बल्कि संस्कृति, मानवीय मूल्यों से युक्त से एवं प्रेरित हो।

डा. विमलेश सिंह के अनुसार हमारे भारत में निर्माण केवल ज्ञान देने से नहीं होता है। राष्ट्र का निर्माण लाखों करोड़ों लोगों के मस्तिष्क और महत्वाकांक्षाओं को आकार देता है।

यह देश को आगे बढ़ने को प्रेरित करता है। अतः इन्होंने धार्मिक व नैतिक शिक्षा पर कम ध्यान केंद्रित किया है। आर्थिक शिक्षा व विकास पर ज्यादा बोल दिया है।

शोध की आवश्यकता

हमारे भारत में धार्मिक नैतिकता, छात्रों के समग्र और मूल्य आधारित शिक्षा और छात्रों के समग्र विकास पर बहुत शोध उपलब्ध है। साहित्य समीक्षा से प्राप्त अध्ययन से ज्ञात हो रहा है कि जबकि अभी हमारे भारत में विकसित भारत 2047 के लक्ष्य के संदर्भ में इस विषय पर अभी भी शोध की मात्रा कम है जैसे कि NEP 2020 के समग्र विकास, धार्मिक नैतिकता के संबंध के अध्ययन। परंतु विकसित भारत 2047 के राष्ट्रीय उद्देश्य नवाचार, सामाजिक सद्भाव, नैतिक नेतृत्व और उत्तरदायी नागरिकता के संदर्भ में धार्मिक नैतिकता की भूमिका पर अभी व्यवस्थित शोध उपलब्ध नहीं है। इसलिए हमारे भारत में अभी विकसित भारत @ 2047 के विकास के लिए शोध आवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्य

1– धार्मिक नैतिकता की मूल अवधारणा और विभिन्न धर्मो द्वारा सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।

2– NEP 2020 और विकसित भारत @ 2047 के दृष्टिकोण का अध्ययन

अध्ययन की प्रविधि

शोधार्थी के द्वारा यह अध्ययन पूर्णता व्याख्यात्मक एवं वर्णनात्मक है और प्रस्तुत शोध में तथ्यों को द्वितीय स्रोतों के माध्यम से जैसे जर्नलों, समाचार पत्र, पुस्तकों, शासकीय व अशासकीय स्तर पर प्रकाशित पत्र पत्रिकाएं तथा विभिन्न वेबसाइटों के माध्यम से किया गया है।

धार्मिक नैतिकता की मूल अवधारणा आत्मिक और विभिन्न धर्मो द्वारा सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना

धर्म एक ऐसा तत्व है। जो हमारे कर्तव्य का बोध कराता है। और हमें कर्तव्य निष्ठ मार्ग की ओर अग्रसारित करता है। भारतीय संस्कृति में धर्म और नैतिकता गहराई से जुड़े हुए हैं। इनका घनिष्ठ संबंध है– एक दूसरे से और यह सामाजिक व्यवहार व्यक्तिगत आचरण और आध्यात्मिक विकास को आकार दिया है। धर्म हमारे जीवन में नैतिक नियमों और कर्तव्यों को आधार प्रदान करता है। जबकि नैतिकता जैसे कि सत्य, अहिंसा और करुणा इन मूल्यों को व्यवहार में लाती है। धर्म और अहिंसा एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। जहां धर्म नैतिक शिक्षा और सामाजिक ढांचे के लिए एक मार्गदर्शक का काम करता है । वहीं नैतिकता उन सिद्धांतों को जीवन में उतारने का माध्यम है जो हमारे जीवन व्यापार में बहुत सहायक होते हैं। इसका शाश्वत उदाहरण है–

रामायण में राम का मर्यादा पालन महाभारत में युधिष्ठिर की सत्य निष्ठा और गीता में अर्जुन को दिया गया कर्म योग का संदेश शिक्षा के शाश्वत उदाहरण है।

विभिन्न धर्म में नैतिकता के प्रमुख मूल्य

- हिंदू धर्म– सत्य, अहिंसा, धर्म, कर्म, योग, करुणा
- जैन धर्म– अहिंसा, सत्य, आस्तेय चोरी ना करना, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह
- सिख धर्म– सच्चाई, सेवा, साहस, करुणा, समानता
- इस्लाम– ईमानदारी, सहिष्णुता, दया, न्याय, कर्म
- ईसाई धर्म– प्रेम, करुणा, क्षमा, सेवा, सत्य

सार्वभौमिक नैतिक मूल्य– हमारे समाज में विभिन्न धर्म में भिन्नता होने के बावजूद कुछ नैतिक मूल्य सभी धर्म में समान रूप से पाए जाते हैं जैसे सत्य, अहिंसा, करुणा, दया, अनुशासन सेवा भाव, क्षमा न्याय ।

NEP 2020 और विकसित भारत 2047 का दृष्टिकोण

भारत सरकार का विकसित भारत 2047 एक महत्वाकांक्षी विजन है जिसका लक्ष्य 2047 में भारत स्वतंत्रता की शताब्दी तक देश को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। इसमें समावेशी शिक्षा, समग्र विकास, समग्र आर्थिक विकास, समृद्धि, सामाजिक उन्नति आदि विकास दिया गया है इसके निम्न बिंदु है–

शिक्षा की उत्कृष्टता– प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक सभी स्तरों पर शिक्षा में सुधार किया गया है। इसमें उत्तम शिक्षक प्रशिक्षण, उचित पाठ्यक्रम और बुनियादी ढांचे का विकास शामिल है जिससे शिक्षा की गुणवत्ता को उच्च बनाया जा सके।

कौशल विकसित करना– NEP 2020 में व्यावसायिक शिक्षा व कौशल शिक्षा पर जोर दिया गया है। छात्र–छात्राओं को हस्तशिल्प कोडिंग, इलेक्ट्रॉनिक डिजिटल, कृषि आदि का व्यावहारिक शिक्षण पर बल दिया गया है।

डिजिटल शिक्षा में वृद्धि – NEP 2020 के अनुसार डिजिटल प्रणाली में वृद्धि की जाएगी। यह कोविड़–19 महामारी के बाद ऑनलाइन शिक्षा में मुख्य रूप से वृद्धि हुई है। जिससे कि अब शिक्षक ऑनलाइन के जरिए शिक्षार्थियों को ज्ञान प्रदान करने का प्रयत्न करेंगे।

अनुसंधान में वृद्धि– NEP 2020 के अनुसार रिसर्च फाउंडेशन की स्थापना की जाएगी और अनुसंधान में वृद्धि होगी और क्षेत्र में अन्वेषण को प्रोत्साहित किया जाएगा।

आधुनिक शिक्षा पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा का अभाव– आधुनिक शिक्षा पाठ्यक्रम में विज्ञान, तकनीक, कौशल रोजगार आदि विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। लेकिन आधुनिक शिक्षा में नैतिक शिक्षा को प्राथमिकता नहीं दी गई है जिससे विद्यार्थियों में सत्य, अहिंसा, करुणा, अनुशासन, ईमानदारी, राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी, नैतिक निर्णय लेने की क्षमता आदि गुण विकसित नहीं हो पाते हैं। जिससे विद्यार्थियों में नैतिकता का अभाव पाया जाता है। वह समझ में उचित ढंग से व्यवहार नहीं कर पाते हैं। आजकल शिक्षार्थी डिजिटल युग में छात्र ऑनलाइन संसाधनों पर अत्यधिक निर्भर हो गए हैं और सामूहिक गतिविधियां, नैतिक चर्चा, सामाजिक सेवा मूल्य आधारित कहानी जैसी गतिविधियां पाठ्यक्रम से गायब हो गई है। अतः यह सब नैतिकता का ही अभाव है।

डिजिटल मीडिया का आधुनिक जीवन शैली पर प्रभाव

आज हमारा युग पूरी तरह डिजिटल मीडिया पर निर्भर हो गया है छोटे बच्चों से लेकर युवा स्मार्टफोन का प्रयोग कर रहा है। यह जहां तक हमारे जीवन में सब कुछ आसान बना रहा है। वही यह युवा को अपाहिज भी बना दे रहा है। यह अत्यधिक प्रयोग करने से मानसिक स्वास्थ्य में भी कमी देखने को मिल रहा है और साइबर बुलिंग और उत्पीड़न जैसे समस्या उत्पन्न हो रही है। और वास्तविक जीवन के रिश्तों पर प्रभाव पड़ रहा है। रिश्तो की गुणवत्ता में कमी आ रही है। डिजिटल मीडिया का पर्याप्त प्रयोग पारिवारिक अलगाव भी ला रहा है। लोग अपने परिवार को समय नहीं दे पा रहे हैं यह भी एक चुनौती ही है।

सुझाव

हमारा भारत एक ऐसा विविधता पूर्ण और आध्यात्मिक रूप से समृद्धि देश है जिसमें छात्रों के समग्र विकास के लिए धार्मिक नैतिकता को शिक्षा में संतुलित एवं वैज्ञानिक तरीके से शामिल करना आवश्यक है।

सार्वभौमिक धार्मिक व नैतिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना धार्मिक नैतिकता का लक्ष्य है। किसी एक धर्म का प्रचार प्रसार नहीं होना चाहिए। हमारे देश में सार्वभौमिक मूल्य का संवर्धन किया जाना चाहिए और सभी धर्म में धार्मिक व नैतिक मूल्य समान होते हैं। सत्य, अहिंसा, करुणा, सेवा, दया, सहिष्णुता, निष्ठा, ईमानदारी आदि को कक्षाओं में मूल्य परक कहानी पंचतंत्र, जातक कथाओं, गुरु की परंपरा की कथाओं को शामिल किया जाना चाहिए।

मूल्य शिक्षा मापक का निर्माण– NEP 2020 में स्पष्ट रूप से वर्णित है कि शिक्षा केवल ज्ञान आधारित नहीं बल्कि मूल्य आधारित होना चाहिए ताकि बच्चों का विकास उचित रूप से किया जा सके। इसके लिए अलग–अलग आयु समूह में मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम को विकसित किया जाना चाहिए।

प्राथमिक स्तर–

इसमें कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों को सम्मिलित किया गया है। इनका मूलभूत नैतिक मूल्य सम्मान दया, अच्छे आचरण को सिखाया जाना चाहिए।

उच्च प्राथमिक स्तर–

इसमें कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। बच्चों को पर्यावरण नैतिकता, सहयोग, जिम्मेदारी, डिजिटल नैतिकता का भी ज्ञान देना चाहिए जिससे बच्चों का समग्र विकास हो सके।

माध्यमिक स्तर–

इस स्तर में कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। इस स्तर के विद्यार्थियों को नैतिक तर्क का नेतृत्व, सामाजिक सेवा और जीवन कौशल आधारित ज्ञान का निर्माण किया जाना चाहिए।

उच्च स्तर–

इस स्तर में विद्यार्थी तर्क समझने योग्य हो जाता है। विद्यार्थियों को कार्य स्थल नैतिकता, लोकतांत्रिक मूल्य व संवैधानिक मूल्य ज्ञान विकसित करना चाहिए जिससे विद्यार्थियों का समग्र विकास किया जा सके। इसके लिए विद्यार्थियों को विषय आधारित ज्ञान देना चाहिए। कक्षा के दौरान प्रोजेक्ट का निर्माण भी शिक्षक द्वारा

होना चाहिए और समूह आधारित गतिविधियों से भी बच्चा जल्दी सिखता है और उच्च शिक्षार्थियों में रिसर्च की भी प्रेरणा देना चाहिए जिससे ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक हो सके और विकास की ओर बढ़ सके।

शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण

आज के आधुनिक युग में विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए शिक्षकों का भी उच्च ज्ञान प्राप्त करना अति आवश्यक है। यह तभी संभव है जब शिक्षकों को भी समय–समय पर प्रशिक्षण दिया जा सके जिससे धार्मिक नैतिकता को, शिक्षा को प्रभावी रूप से जोड़ा जा सके। और यदि शिक्षक स्वयं मूल्य आधारित दृष्टिकोण रखते हो तो वह छात्रों को भी सही दिशा निर्देश दे पाएंगे इसीलिए प्रशिक्षण देना आवश्यक है जो निम्न है–

1–शिक्षकों को सार्वभौमिक नैतिकता का प्रशिक्षण देना।

2– कक्षा में अनैतिक समस्याओं को संभालने की क्षमता होनी चाहिए।

3– बहु धार्मिक समाज व बहु सांस्कृतिक समाज की समझ होनी चाहिए।

4– बच्चों में मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को समझने का प्रशिक्षण देना चाहिए।

5–मूल्य आधारित कहानी से जुड़े पाठ को भी सीखने–सिखाने का प्रशिक्षण देना चाहिए।

ध्यान, योग, मानसिक स्वास्थ्य को शिक्षा में शामिल करना– NEP (2020) में मानसिक स्वास्थ्य, ध्यान, योग को भी शामिल किया गया है। इसमें बताया है कि यह सब संतुलित मात्रा में होनी चाहिए। बच्चों का मानसिक स्थिति सही रूप से होती है। मन एकाग्र रहता है। योग व ध्यान से अनेक लाभ जैसे मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन, तनाव प्रबंधन, आत्म नियंत्रण, एकाग्रता में वृद्धि। यह सब धार्मिक वह आध्यात्मिक रूप से शिक्षा का हिस्सा है। लेकिन उन्हें वैज्ञानिक रूप से भी सिद्ध किया गया है। यह छात्रों के शारीरिक के आध्यात्मिक भावनात्मक विकास को संतुलित करता है।

निष्कर्ष

हमारा देश विकसित देश बनने की दिशा में अग्रसर है। धार्मिक नैतिक शिक्षा छात्रों के समग्र विकास की आधारशिला है। विकसित भारत @ 2047 के संदर्भ में छात्रों के समग्र विकास पर धार्मिक नैतिकता का प्रभाव अत्यंत प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है। धार्मिक नैतिकता छात्रों को न केवल सशक्त बनाती है। बल्कि उन्हें आध्यात्मिक सामाजिक भावनात्मक रूप से भी समृद्धि करती है। विभिन्न धर्म हिंदू, सिख, इसाई आदि से प्रतिपादित अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, सहयोग जैसे सार्वभौमिक मूल्य छात्रों के चरित्र निर्माण, मानसिक संतुलन जैसे और नैतिक नेतृत्व के विकास में गहरा योगदान देते है और धार्मिक नैतिकता छात्रों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्यरत रहता है। जहां आज के युग में डिजिटल और तकनीकी का प्रयोग अधिक मात्रा में हो रहा है और मूल्य हीनता, तनाव, सामाजिक विभाजन और प्रतिस्पर्धा जैसी चुनौतियां बढ़ रही है। धार्मिक नैतिकता, जिम्मेदार नागरिक, संवेदनशील मानव और नैतिक नेतृत्व बनाने में सहायक होती है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि विकसित भारत @ 2047 की परिकल्पना को सरकार करने के लिए यह आवश्यक है।

संदर्भ

1– झा, देव निरंजन (2016), भारतीय संस्कृति नैतिकता एवं धर्म (international general of Sanskrit research)

2– जोशी, सविता (2022), भारतीय संस्कृति में नैतिक शिक्षा का महत्व और उसकी वर्तमान प्रासंगिकता

3– सिंह, गीता (2022), भारतीय ज्ञान परंपरा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रासंगिकता। AMIERJ

5– साहित्य अकादमी, (2023), वार्षिक प्रतिवेदन साहित्य अकादमी प्रकाशन।

6– नीति आयोग (2024), भारत की संस्कृति और रचनात्मक अर्थव्यवस्था।

7– पिवहरे, राजेंद्र कुमार (2025), विकसित भारत में साहित्य की भूमिका एवं योगदान एक अध्ययन, जनरल ऑफ एडवांस स्कॉलरली रिसर्च इन ए लीड एजुकेशन।

8– विजन आईएएस (2025), एकात्मक मानववाद शासन की नैतिक आधार शिला।

9– शुक्ला, डॉ सी. एस. (2013), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार अनुभव, पब्लिकेशन हाउस, इलाहाबाद।

10– अरोड़ा, पंकज एवं शर्मा, उषा (2021), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) रचनात्मक सुधारो की ओर, शिक्षा पब्लिकेशन, दिल्ली।

11– सिंह, डॉ. विमलेश (2025), विकसित भारत @ 2047

Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).